✺ 10 अक्तुबर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] ड्रामानुसार बच्चों को पतित से पावन बनाने के लिए भगवान भी बंधायमान है। उनको आना ही है पुरूषोत्तम संगमयुग पर।

2] बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं जब ओम् शान्ति कहा जाता है तो गोया अपनी आत्मा को स्वधर्म का परिचय दिया जाता है। तो जरूर बाप भी ऑटोमेटिकली याद आता है क्योंकि याद तो हरेक मनुष्य भगवान को ही करते हैं। सिर्फ भगवान का पूरा परिचय नहीं है। भगवान अपना और आत्मा का परिचय देने ही आते हैं। पतित-पावन कहा ही जाता है भगवान को। पतित से पावन बनाने के लिए भगवान भी ड्रमा अनुसार बंधायमान है। उनको भी आना है पुरूषोत्तम संगमयुग पर। संगमयुग की समझानी भी देते हैं। पुरानी दुनिया और नई दुनिया के बीच में ही बाप आते हैं। पुरानी दुनिया को मृत्युलोक, नई दुनिया को अमरलोक कहा जाता है।

3] भक्ति मार्ग में तुम ईश्वर अर्थ करते हो। परन्तु ईश्वर को जानते नहीं हो। इतना समझते हो ऊंच ते ऊंच भगवान है। ऐसे नहीं कि ऊंच ते ऊंच नाम रूप वाला है। वह है ही निराकार। फिर ऊंच ते ऊंच साकार यहाँ होते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को देवता कहा जाता है। ब्रह्मा देवताए नमः, विष्णु देवताए नमः फिर कहते हैं शिव परमात्माए नमः। तो परमात्मा बड़ा ठहरा ना। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को परमात्मा नहीं कहेंगे। मुख से कहते भी हैं शिव परमात्माए नमः तो जरूर परमात्मा एक हुआ ना। देवताओं को नमन करते हैं। मनुष्य लोक में मनुष्य को मनुष्य कहेंगे। उनको फिर परमात्माए नमः कहना– यह तो पूरा अज्ञान है। सबकी बुद्धि में यह है कि ईश्वर सर्वव्यापी है। अभी तुम बच्चे समझते हो भगवान तो एक है, उनको ही पतित-पावन कहा जाता है। सबको पावन बनाना याह भगवान का ही काम है।

4] कितना सहज बाप कहते हैं सिर्फ अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो।

5] जो दृढ़ निश्चय रखते हैं, तो निश्चय की विजय कभी टल नहीं सकती। चाहे पांच ही तत्व या आत्मायें कितना भी सामना करें लेकिन वो सामना करेंगे और आप अटल निश्चय के आधार पर समाने की शक्ति से उस सामना को समा लेंगे। कभी निश्चय में हलचल नहीं हो सकती। ऐसे अचल रहने वाले विजयी बच्चे ही बाप के स्नेही हैं। स्नेही बच्चे सदा ब्रह्मा बाप की भुजाओं में समाये रहते हैं।

✺ योग-

1] मीठे बच्चे– तुम जिता-जितना बाप को प्यार से याद करेंगे उतना आशीर्वाद मिलेगी, पाप कटते जायेंगे।

2] बाप कहते हैं मुझे याद करो। तो जिन्होंने जास्ती याद किया होगा उन्होंने ही आशीर्वाद ली होगी। आशीर्वाद कोई मांगने की चीज़ नहीं है। यह तो मेहनत करने की चीज़ है। जितना जास्ती याद करेंगे उतना जास्ती आशीर्वाद मिलेगी अर्थात् ऊंच पद मिलेगा। याद ही नहीं करेंगे तो आशीर्वाद भी नहीं मिलेगी।

✺ धारणा-

1] बाबा कहते बच्चे- तुम अपने विचित्रता के धर्म में टिको, चित्र के धर्म में नहीं। जैसे बाप विदेही, विचित्र है ऐसे बच्चे भी विचित्र हैं फिर यहाँ चित्र (शरीर) में आते हैं। अभी बाप बच्चों को कहते हैं बच्चे विचित्र बनो, अपने स्वधर्म में टिको। देह-अभिमान में नहीं आओ।

2] हद के सम्बन्ध को छोड़ अब बेहद के सम्बन्ध को याद करना है।

3] देह-अभिमान में न आओ। बाप कितना समझाते हैं- इसमें याद की बहुत जरूरत है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम सतोप्रधान, प्योर बनेंगे।

4] सर्व खजानों की चाबी प्राप्त करनी है तो परमात्मा प्यार के अनुभवी बनो।

✺ सेवा-

1] – – –